मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । दुनियां के मजदूरो, एक हो !

# फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है । दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 33 मार्च 1991 50 पैसे

## पूंजीवादी कानून और मजदूर

### भिलाई में मजदूर नेता गिरफ्तार

भिलाई स्टील प्लांट की लोहा खदानों में मजदूर आन्दोलन की चर्चा हम अपने अंकों में कुछ विस्तार से करते रहे हैं क्योंकि उसके अच्छे और बुरे पहलुओं के भारत में मजदूर आन्दोलन के लिए महत्वपूर्ण सबक हैं । दिसम्बर 90 अंक में भी हमने लोहा खदानों में सक्रिय इस आन्दोलन के भिलाई स्टील प्लांट के आस-पास के कारखानों में फैलने के सन्दर्भ में चर्चा की थी । भिलाई स्टील की लोहा खदानों में सक्रिय संगठन का नाम छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ और यह मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी के इर्द-गिर्द चलता है । इधर हमें भिलाई से एक मित्र का पत्र मिला है जिसमें उन्होंने मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी की चार फरवरी को पुराने केसों में गिरफ्तारी और अदालतों द्वारा जमानत पर उन्हें नहीं छोड़ने की पृष्ठभूमि की जानकारी है । प्रस्तुत लेख उस दोस्त द्वारा भेजी सामग्री पर आधारित है ।

भिलाई स्टील प्लान्ट के आस-पास 105 कारखाने हैं । इन सब में मजदूर संगठनों के आम पर केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों से सम्बन्धित मैनेजमेंटों की पाकेट यूनियनें हैं । जुलाई 90 में ए सी सी सीमेंट कारखाने में मजदूर नेता नियोगी के संगठन की अगुआई में ठेकेदारों के मजदूरों द्वारा प्राप्त सफलता के बाद यह संगठन आस-पास के 50 कारखानों में फैल गया । भिलाई स्टील के आस-पास के कारखानों में उमड़ते-घुमड़ते मजदूर आन्दोलन को दबाने के लिए 2 अक्टूबर 90 को भिलाई में सभा पर सरकार द्वारा रोक की चर्चा हम दिसम्बर 90 अंक में कर चुके है ।

नये खतरे के खिलाफ मैनेजमेंटें एकजुट हो गई । मैनेजमेंटों ने अपने गुन्डों को मार-पीट करने को कहा । गुन्डों ने क्षेत्र में सक्रिय छह वर्करों पर घातक हमले किए । फिर भी मजदूर नेता नियोगी के संगठन की अगुआई में क्षेत्र के सबसे बड़े उद्योग समूह, सिम्पलैक्स के चार कारखानों में हड़ताल शुरू हो गई । इस हड़ताल को तोड़ने के लिए मैनेजमेंट ने एक केन्द्रीय ट्रेड यूनियन की सहायता ली और मध्य प्रदेश के बाहर से भी गुन्डे लाई । मैनेजमेंट ने एक कारखाने के गोदाम में आग लगा कर सक्रिय मजदूरों को केसों में फंसाया पर फिर भी सिम्पलैक्स मैनेजमेंट अपने चार कारखानों में हड़ताल तोड़ने में सफल नहीं हुई । मैनेजमेंटों की सभी कोशिशें नाकाम साबित होने पर सरकार हरकत में आई । पुलिस ने आठ सौ मजदूरों को गिरफ्तार किया । दल्ली राजहरा स्थित लोहा खदानों के मजदूर सिम्पलैक्स के हड़ताली मजदूरों को रुपये-पैसों से मदद कर रहे थे इसलिए सरकार ने दांव-पेंच से दल्ली राजहरा की कई श्रमिक सहकारी समितियों में मजदूरों की तनखा रोक दी । पर इस सब के बावजूद मजदूर मोर्चे में दरार नहीं आई ।

इस पर सरकार ने दुर्ग जिले में दायर पांच-छह साल पुराने 13 केसों में मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी को चार फरवरी को गिरफ्तार कर लिया । सरकार ने राजनन्दगांव जिले में भी इस मजदूर नेता के खिलाफ दो पुराने केस ढूंढ लिये हैं । केसों में हाजिर नहीं होने के नाम पर गिरफ्तारी और अदालतों द्वारा जमानत पर रिहा करने से इन्कार—पूंजीवादी कानून का ड्रामा जारी है । वैसे, इन सालों में सरकारी अफसरों से मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी सैकड़ों बार मिला है पर भगोड़े के नाते उसे किसी ने गिरफ्तार नहीं किया ·····

पूंजीवादी कानून और मजदूरों के रिश्ते की हकीकत की एक झलक इस मामले में साफ—साफ दिखाई देती है । **पूंजीवादी कानून बिना**

(शेष कालम दो पर)

## हितकारी पोट्रीज

15—16 टन कच्चा माल हर रोज तैयार करवाने के बजाय मैनेजमेंट 8-10 टन कच्चा माल बनवा रही है ताकि मजदूरों पर स्लो डाउन करने और प्रोडक्शन का नुकसान करने के आरोप के लिए मैनेजमेंट आधार तैयार कर सके । इधर सब मजदूरों को एक दिन तनखा देने के बजाय मैनेजमेंट ने टुकड़ों में वेतन देना शुरू कर दिया है । प्याली फैक्ट्री उर्फ हितकारी पोट्रीज मैनेजमेंट जाल बिछा रही है·····

पूंजीवादी साजिशों का मुकाबला मजदूर एकता से, अन्धी नहीं बल्कि आंखों वाली एकता से ही कर सकते हैं । अपनी एकता का प्रदर्शन हितकारी पोट्रीज के मजदूरों ने 14 फरवरी को किया । एक मजदूर को फैक्ट्री गेट से पकड़ कर पुलिस ले गई । शिफ्ट छूटने पर सब मजदूर जलूस बना कर पांच नम्बर थाने पर पहुंचे और अपने गिरफ्तार साथी की रिहाई की मांग की । थानेदार की चिकनी-चुपड़ी बातों में मजदूर नहीं आये और तब तक थाने पर जुटे रहे जब तक पुलिस ने गिरफ्तार मजदूर की रिहा नहीं कर दिया । 2 मार्च को सब मजदूरों ने अपना-अपना खाना फैक्ट्री मैनेजर के सामने परोस कर फिर अपनी एकता का प्रदर्शन किया ।

इधर 22 फरवरी से भूख-हड़ताल का एक सिलसिला फैक्ट्री गेट पर चल रहा है हर रोज दो मजदूरों का भूख हड़ताल पर बैठना सक्रिय मजदूरों को चिन्हित करने के लिये मैनेजमेंट के काम तो आता ही है, इसमें मजदूरों के लिए भविष्य में बिचौलिये पैदा हो जाने का खतरा भी है । भूख हड़ताल का सिलसिला चलाना हो तो भी बारी-बारी से सौ—सौ मजदूरों का भूख हड़ताल पर बैठना ही मजदूरों की ताकत बढ़ाने वाला कदम है । सामूहिक कदम और फैसले लेने के लिये साइड मीटिंगों में सामूहिक विचार-विमर्श के जरिये ही बिचौलियों के उभरने पर मजदूर अंकुश लगा सकते हैं । आम सभा में खुले विचार-विमर्श के बाद ही कोई समझौता मानने की बात हितकारी पोट्रीज के मजदूरों को अपनी गांठ में बांध लेनी चाहिए ।

—o—

(पहले कालम से क्रमशः·····)

**नख—दांत वाला चीता नहीं है जैसा कि आंख पर पट्टी बांधे और हाथ में तराजू लिये वह तस्वीरों में दिखाया जाता है । मजदूरों के हित की बात हो तो पूंजीवादी कानून का जंजाल वर्षों में एक कदम उठाने देता है और पूंजीवादी हित की बात हो तो मिनटों में दबी—छुपी फाइलें अपने तीखे दांतों के साथ सामने आ जाती हैं । पूंजीवादी कानून असल में अपनी आंखों पर नहीं बल्कि मजदूरों की आंखों पर पट्टी बांधने के लिए न्याय का ढोंग करता है·····**

4 फरवरी को मजदूर नेता नियोगी की गिरफ्तारी के खिलाफ 5 फरवरी को राजनन्द गांव कपड़ा मिल के मजदूरों ने हड़ताल की और भिलाई स्टील की दल्ली राजहरा स्थित लोहा खदानों में टूल डाउन स्ट्राइक हुई । भिलाई-दल्ली राजहरा-राजनन्द गांव-रायपुर-हिर्री माइन्स में हर रोज जलूसों का सिलसिला चल रहा है·····

—o—

**हमारे लक्ष्य हैं:**— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना । 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना । 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना । 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना ।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है । बातचीत के लिये बेझिझक मिलें । टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे ।

**संपर्क — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001**

## मार्क्सवाद

(आठवीं किस्त)

पिछले अंक में हमने मानव समाज के प्रारम्भिक गठन, जो कि वर्ग-विहीन सामाजिक संगठन था, उसकी चर्चा की। रोटी और सुरक्षा की तंगी की स्थिति में उन्हें हासिल करने की प्रक्रिया सामाजिक जीवन को अन्ततः निर्धारित करती है—इसे उस दौर के आदिम साम्यवादी संगठन के सन्दर्भ में दिखाने की हमने कोशिश की। इसी सिलसिले में यहाँ हम कन्द-मूल पर गुजर करने वाले समाज में शिकार के विकास द्वारा लाये उल्लेखनीय परिवर्तन पर गौर करेंगे।

आग का उपयोग सीख कर हमारे आदिम पुरखे कन्द-मूल के साथ-साथ मांस-मछली को भोजन के तौर पर इस्तेमाल करने के योग्य भी बने। शिकार के विकास के साथ मानव भूमध्य रेखा के बरसाती जंगलों की कैद से मुक्त हो कर पृथ्वी पर फैल गये।

सामाजिक जीवन में शिकार के उल्लेखनीय बन जाने के दौर में भी खास करके हिंसक जानवरों से सुरक्षा के लिए पहले की ही तरह समूह में रहना तो आवश्यक था ही, स्वयं शिकार के लिये भी सामूहिक प्रयास जरूरी थे। पत्थर की नोक वाले भाले—कुल्हाड़ी और लकड़ी की गदा जैसे हथियारों से शिकार की सफलता के लिए यह आवश्यक था कि उसके लिए सामूहिक प्रयास किया जाये। बचे-खुचे तौर पर आज भी कुत्तों की मदद से पुरातन ढंग से शिकार करने में सामूहिकता की भूमिका और आवश्यकता साफ-साफ देखी जा सकती है। मध्य प्रदेश के सहरिया आदिवासी आज भी साम्भर-चीतल का कुत्तों से शिकार करते हैं। कुत्ते छोड़ने वाले और पानी की आड़ में साम्भर-चीतल को घेर कर कुल्हाड़ियों से मारने वाले मिलकर ही शिकार करने में सफल होते हैं—मारे गये जानवर के मांस को शिकार में हाथ बटाने वाले सब सदस्यों में बराबर-बराबर ढेरियां बना कर बाँटा जाता है। खड़ी चट्टानों से शहद तोड़ने में भी इसी प्रकार का चलन सहरिया आदिवासियों में देखने को मिलता है। इसलिए कन्द-मूल बटोरने की एक छत्रता के दौर की ही तरह शिकार के सामाजिक जीवन में उल्लेखनीय बन जाने के समय भी समाज का आदिम साम्यवादी स्वरूप बरकरार रहा।

हाँ, इस बीच एक उल्लेखनीय परिवर्तन अवश्य हुआ। समाज में स्त्री के स्थान पर पुरुष ने प्रमुख पोजिशन हासिल की। कहा जाता है कि आदिम साम्यवाद का आरम्भिक दौर 'मातृसत्ता' का दौर था और बाद का दौर पितृसत्ता का। लेकिन जैसे मातृसत्ता शब्द का समाज में स्त्री की प्रमुखता के दौर के लिए इस्तेमाल गलत है, वैसे ही आदिम साम्यवाद में पुरुष की प्रमुखता के दौर के लिए भी 'पितृसत्ता' शब्द का प्रयोग उचित नहीं है। दोनों मामलों में बराबरी वालों में पहला वाली बात थी—आदिम साम्यवादी समाज में नारी-प्रधानता और पुरुष-प्रधानता के दोनों दौरों में समूह के सब सदस्य बराबर होते थे, फ़र्क मात्र उन्नीस-बीस का होता था।

**नारी प्रधानता के स्थान पर पुरुष प्रधानता का कारण शिकार का सामाजिक जीवन में उल्लेखनीय बन जाना लगता है। उस समय शिकार के लिये शारीरिक बल की प्रमुख भूमिका थी जिससे पुरुषों की शिकार में भूमिका महत्वपूर्ण बनी। लगता है कि इसी वजह से आदिम साम्यवादी समाज में नारी प्रधानता के स्थान पर पुरुष प्रधानता आई।**

अगले अंक में हम समाज के बटने, वर्ग समाज की उत्पत्ति पर चर्चा करेंगे।

[जारी] —ओ

—0—


**पढ़िये और पढ़ाइये**

**सचेत मजदूर का**

**क-ख-ग**

निर्जीव से जीव-पशु से मानव-भारत में मानव-आदिम साम्यवाद समाज स्वामी समाज-भारत में जातियां-सामन्तवाद-सरल माल उत्पादन-विश्व मन्डी-पूंजीवादी माल उत्पादन-पूंजी और भारत में पूंजी-कांग्रेस पार्टी और मोहनदास करमचन्द गांधी-गांधीवाद नेहरूवाद-पूंजी आज-सचेत मजदूरों के कार्यभार।

50 पेज 5/—

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, फरीदाबाद-121001 से डाक द्वारा मंगवा सकते हैं।


## बिचौलियों के करम

### अमेटीप मशीन टूल्स

एस पी की छत्रछाया में मैनेजमेन्ट और बिचौलियों में 13 दिसम्बर को हुए समझौते को अमेटीप मजदूरों ने जब ठुकरा दिया था तब मजदूरों को झुकाने के लिये मैनेजमेन्ट ने 17 दिसम्बर को फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी थी। इस पर बिचौलिये फिर सक्रिय हो गये थे। अमेटीप मजदूरों को खतरे से सावधान करने के लिये हमने अखबार के जनवरी अंक में लिखा था—"बिचौलियों की कोर्ट-कचहरी वाली भाग-दौड़, साहबों-मन्त्रियों को अर्जियां और फैक्ट्री गेटों पर घूनी रमाना मैनेजमेन्ट के हमलों से मुकाबले के लिए मजदूरों के कारगर औजार नहीं हैं। अमेटीप मजदूरों को मैनेजमेंट के खिलाफ अपनी ताकत बढ़ाने के सवाल पर विचार करना चाहिए। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर अमेटीप मजदूरों को हर रोज जलूस निकालने पर गौर करना चाहिये। ऐसे जलूस और अमेटीप मजदूरों के परिवारों का इन जलूसों में शामिल होना, अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों का इन जलूसों में शामिल होना अमेटीप मैनेजमेन्ट और उसके सहायक डी एल सी-एस पी-डी सी वाले तन्त्र के खिलाफ अमेटीप मजदूरों की ताकत बढ़ायेगा"।

अमेटीप मजदूर शंका तो करते रहे पर रहे बिचौलियों के ही चक्कर में। नतीजा है मैनेजमेन्ट और बिचौलियों में हुए समझौते के बाद 18 फरवरी को तालाबन्दी खत्म होना। दो महीने लाक आउट की मार और अपनी ताकत लगातार कमजोर होती देख मजदूरों को मन मार कर इस समझौते को मानना पड़ा है पर वे गुस्से से उबल रहे हैं। मजदूरों के असन्तोष को ठन्डा करने के लिए बिचौलियों को चार मार्च को साइड मीटिंग करनी पड़ी। उस मिटिंग में **बिचौलियों ने कहा कि उनसे समझौते पर जबरन दस्तखत करवाए गए हैं**! वैसे, नौकरी से निकाले हुए एक यूनियन लीडर को मैनेजमेन्ट ने 1250 रु० मन्थली बांध दी है···

अमेटीप मजदूरों को लगी इस ठोकर का भी मजदूरों के लिए यही सबक है कि संघर्ष की बागडोर अपने हाथों में रखकर और लगातार सामूहिक विचार-विमर्श द्वारा फ़ैसले लेने की परिपाटी अपना कर ही मजदूर उस दलदल में फसने से बच सकते हैं जिसमें बिचौलिए उन्हें बार-बार धकेलते हैं।

प्याली फैक्ट्री के मजदूर अमेटीप के घटनाक्रम से सीखें।

—0—

### जगह—जगह हड़ताल

बम्बई में फाइव स्टार होटल सी रॉक शेराटन के 850 मजदूर 31 दिसम्बर 90 से हड़ताल पर हैं। पूंजीवादी कानूनों को धत्ता बता कर मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों द्वारा मजदूर काम पर लाने की कोशिश की। हड़ताली मजदूरों द्वारा इस पर रोक लगाने पर पुलिस ने गोली चलाई। 65 मैनेजमेन्ट काडर के, 75 मैनेजमेन्ट ट्रेनी और सैक्यूरिटी की वर्दी में 20 गुन्डों की मदद से मैनेजमेन्ट होटल का काम-काज ऐसा चला रही है कि हर रोज आठ लाख रुपयों का घाटा हो रहा है।

दक्षिण भारत के प्रमुख कोयला खदान क्षेत्र, सिंगारेनी खदानों में मजदूरों के संघर्षों ने मैनेजमेन्ट और बिचौलियों की नाक में दम कर रखा है। पिछले छः महिनों में एक करोड़ टन कोयले के टारगेट की जगह 75 लाख टन का प्रोडक्शन हो हुआ है। 'अनुशासन' लागू करने के लिए और सख्ती की चौतरफा मांग पूंजीवादी क्षेत्रों में उठने लगी है।

बंगाल में फोर्ट ग्लोस्टर जूट मिल में मैनेजमेन्ट ने हिंसक वारदातों के बाद 8 फरवरी को तालाबन्दी कर दी।

मलेशिया में 1988 में सरकार ने 17 साल से जारी पाबन्दी उठा कर इलेक्ट्रोनिक्स मजदूरों को कानूनी संगठन बनाने की इजाजत दी। हैरिस कारपोरेशन की एक फैक्ट्री के ढाई हजार मजदूरों ने इस पर कदम उठाया तो मैनेजमेन्ट ने उस फैक्ट्री को अपनी एक कम्पनी से अपनी ही दूसरी कम्पनी में मिला दिया। मैनेजमेन्ट ने 2479 मजदूरों को नई कम्पनी के बही-खातों में ट्रान्सफर कर दिया पर संगठन बनाने में सक्रिय 21 मजदूरों को यह कह कर नौकरी से निकाल दिया कि कम्पनी बन्द हो गई है। फैक्ट्री में मजदूर अपनी पुरानी जगहों पर ही काम कर रहे हैं, बस नाम वाला बोर्ड मात्र बदल दिया गया है। और यह सब पूंजीवादी कानून के मुताबिक न्याय संगत है।

अमरीका में 2,400 डेली न्यूज अखबार के वर्कर 15 अक्टूबर 90 से हड़ताल पर हैं। डेली न्यूज को मैनेजमेन्ट भी होरमल मीट पैकर्स, कान्टिनेन्टल एयर लाइन्स, ग्रेहाउन्ड रोड ट्रान्सपोर्ट आदि की मैनेजमेन्टों की ही तरह पूंजीवादी व्यवस्था के संकट का कुछ ज्यादा ही बोझ मजदूरों पर डालना चाहती है।

—0—


स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गां. मेमो. न. से मुद्रित